Course – BA Education Hons, Part-II
Paper – III (Educational Psychology & Pedagogy)
Topic – Personality
prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 9 : व्यक्तित्व
Unit-9 : PERSONALITY

8.1 व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Personality) :–

व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग बातचीत के दौरान बहुतायत से किया जाता है। वस्तुतः अंग्रेजी शब्द पर्सनालिटी (Personality) लैटिन शब्द पर्सोना (Persona) से बना है जिसका अर्थ नकाब होता है जिसे नायक नाटक करते समय पहनते हैं। व्यक्तित्व को बाहरी वेश भूषा तथा दिखावे के आधार पर परिभाषित किया गया। जिस व्यक्ति का बाहरी दिखावा साधारण होता था, उसका व्यक्तित्व उतना अच्छा नहीं समझा जाता था परन्तु जिस व्यक्ति का बाहरी दिखावा भड़कीला होता था, उसका व्यक्तित्व अच्छा समझा जाता था। परन्तु इस तरह की परिभाषा को मनोवैज्ञानिकों ने अमान्य कर दिया।

Allport 1937 के अनुसार,
"व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।"

"Personality is the dynamic organization within the individual of those psychophysical system that determine his unique adjustment to his environment."

ऑलपोर्ट की परिभाषा का विश्लेषण करने से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं :–

(1) मनोदैहिक संगठन (Psychophysical system) –
Allport के अनुसार व्यक्तित्व का सम्बन्ध शारीरिक तथ्य, मानसिक दोनों तंत्रों से है। यानि ऑलपोर्ट ने दोनों संगठनों पर बल दिया।

Scanned with CamScanner

(2) संगठन (organization):-

Allport ने कहा कि व्यक्तित्व व्यक्ति के शीलगुणों का ~~संगठन~~ योगफल नहीं, बल्कि एक विशेष संगठन है। यदि व्यक्तित्व वास्तव में शीलगुणों का योगफल होता तो सभी व्यक्तियों के व्यवहार एवं समायोजन समान होते।

(3) गत्यात्मकता (Dynamism):-

Allport के अनुसार मनोदैहिक शीलगुणों का यह संगठन स्थिर नहीं है, बल्कि गत्यात्मक है। परिवर्तनशील वातावरण में व्यक्तित्व संगठन में भी परिवर्तन हो सकता है। एक व्यक्ति एक परिस्थिति में ईमानदार तथा दूसरी परिस्थिति में बेईमान प्रमाणित हो सकता है। परन्तु इसके साथ-साथ व्यक्तित्व संगठन में संगति या स्थिरता भी पाई जाती है। यह सत्य है कि एक व्यक्ति एक परिस्थिति में ईमानदार और दूसरी परिस्थिति में बेईमान बन जाता है। परन्तु यह भी असत्य नहीं है कि ईमानदार व्यक्ति अधिकांश परिस्थितियों में ईमानदार ही रहता है।

(4) अपूर्व समायोजन (unique adjustment):-

Allport के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार या समायोजन अपूर्व होता है। एक ही वातावरण में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के समायोजन में भिन्नता होती है। दो व्यक्तियों के समायोजन में कोई समानता नहीं दिख पड़ती है।

8.2 व्यक्तित्व के सिद्धान्त (Theories of Personality):-

व्यक्तित्व के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं:-

(A) प्रकार सिद्धान्त (Type theory):-

प्रकार सिद्धान्त व्यक्तित्व का पुराना सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त इस विश्वास पर आधारित है कि कुछ व्यक्तियों में लगभग एक ही तरह के शीलगुण पाए जाते हैं। शीलगुण वास्तव में व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष हैं और प्रकार इसके बाह्य पक्ष हैं। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित सिद्धान्त हैं:-

(i) हिप्पोक्रेटस का वर्गीकरण (Hippocrates Typology):-

प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में चार प्रकार के द्रव पाए जाते हैं जो व्यक्ति के स्वभाव को निर्धारित करता है। इनके अनुसार जिस व्यक्ति में रक्तद्रव

Scanned with CamScanner

प्रधान होता है, वह आशावादी होता है। वह प्रसन्न तथा खुशमिजाज होता है। जिस व्यक्ति में काला पित्त होता है वह निराशावादी होता है। वह प्रायः उदास तथा खिन्न रहता है। जिस व्यक्ति में पीला पित्त प्रधान होता है, वह चिड़चिड़ा होता है। जिस व्यक्ति में कफ की प्रधानता होती है, वह निष्क्रिय होता है।

क्रेशमर का वर्गीकरण (Kretschmer's Typology):-

(i) कृशकाय (asthenic):- लम्बा तथा दुबले-पतले शरीर वाले व्यक्ति को कृशकाय कहा गया। मांसपेशियाँ अविकसित होती हैं। शरीर का वजन एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम होता है।

(ii) पुष्टकाय (Athletic):- सुडौल तथा संतुलित शरीर। शरीर न अधिक लम्बा और न अधिक नाटा। मांसपेशियाँ विकसित होती हैं।

(iii) पिकनिक स्थूलकाय (Pyknic) मोटे तथा नाटे शरीरवाले को स्थूलकाय कहते हैं। ऐसे लोग शान्तिप्रिय तथा खुशमिजाज होते हैं।

शेल्डन का वर्गीकरण (Sheldon's Typology):- शेल्डन ने व्यक्तित्व को तीन प्रकारों में विभाजित किया:-

(i) गोलाकृतिक (Endomorphy):- मोटे, नाटे तथा गोल शरीर वाले व्यक्ति को गोलाकृतिक कहा गया। इस प्रकार के व्यक्ति के स्वभाव को viscerotonia कहा गया।

(ii) आयताकृतिक (Mesomorphy):- संतुलित शारीरिक रचना वाले व्यक्ति को आयताकृतिक कहा गया। ऐसे लोगों में हड्डियाँ तथा मांसपेशियों का विकास संतुलित होता है। इस प्रकार के व्यक्ति के स्वभाव को Somatotonia कहा गया।

(iii) लम्बाकृतिक (Ectomorphy):- लम्बे तथा दुबले पतले वाले शरीर वाले व्यक्ति को लम्बाकृतिक कहा गया। इस प्रकार के व्यक्ति को Cerebrotonia कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

युंग का वर्गीकरण (Jung's Typology):-

युंग ने व्यक्तित्व को दो प्रकारों में बाँटा:-

(i) अन्तर्मुखी (Introvert):-

ऐसे व्यक्ति संकोचशील, लज्जालु तथा आत्मकेन्द्रित होते हैं। एकान्त में रहना ज्यादा पसंद करते हैं।

(ii) बहिर्मुखी (Extrovert):-

बहिर्मुखी व्यक्ति में सम्बन्धन-आवश्यकता अधिक पाई जाती है। वह लोगों से मिलने जुलने वाला होता है। उसके विचार एवं व्यवहार में लचीलापन होता है।

(B) शीलगुण सिद्धान्त (Trait theory):-

शीलगुण सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व की संरचना भिन्न भिन्न प्रकार के शीलगुणों से ठीक वैसी ही बनी होती है जैसे एक मकान की संरचना ईंट से बनी होती है। शीलगुण सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार व्यक्तित्व के किसी प्रकार द्वारा नियंत्रित नहीं होता है बल्कि भिन्न×2 प्रकार के शीलगुणों द्वारा नियंत्रित होता है। व्यवहार के किसी भी वर्णन को शीलगुण कहलाने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें संगति (consistency) का गुण हो। शीलगुण सिद्धान्त में दो मूल रूप से दो मनोवैज्ञानिकों के विचारों का उल्लेख किया जाता है जो निम्नलिखित है:—

(i) आलपोर्ट का योगदान (Contribution of Allport):—

Allport का नाम शीलगुण सिद्धान्त के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। Allport ने शीलगुण को मुख्यतः दो भागों में बाँटा है:—

(a) सामान्य शीलगुण (Common trait):-

सामान्य शीलगुण से तात्पर्य वैसे शीलगुणों से होता है जो किसी समाज या संस्कृति के अधिकतर लोगों में पाया जाता है।

(b) व्यक्तिगत शीलगुण (Personal trait):-

Allport के अनुसार व्यक्तिगत शीलगुण एक दूसरा महत्वपूर्ण शीलगुण है जिसे उन्होंने

Scanned with CamScanner

व्यक्तिगत प्रवृत्ति कहना उचित ठहराया है। व्यक्तिगत प्रवृत्ति से तात्पर्य वैसे शीलगुणों से होता है जो समाज या संस्कृति के व्यक्ति विशेष तक ही सीमित होता है अर्थात् उस समाज के सभी व्यक्तियों में नहीं पाया जाता है।

Allport ने व्यक्तिगत प्रवृत्ति को तीन भागों में बाँटा है:-

(i) कार्डिनल प्रवृत्ति (cardinal disposition):-

इस तरह की व्यक्तिगत प्रवृत्ति व्यक्तित्व का इतना प्रमुख एवं प्रबल गुण होता है जिसे छिपाया नहीं जा सकता है। सभी व्यक्तियों में कार्डिनल प्रवृत्ति नहीं होती परन्तु जिसमें होती है, वह व्यक्ति पूर्णरूपेण उस प्रवृत्ति या गुण से चर्चित होता है। जैसे:- महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व की कार्डिनल प्रवृत्ति शांति एवं अहिंसा में अटूट विश्वास है और इस गुण से पूरे संसार में वे चर्चित हैं।

(ii) केन्द्रीय प्रवृत्ति (Central disposition):-

केन्द्रीय प्रवृत्ति सभी व्यक्तियों में पाई जाती है। प्रत्येक व्यक्ति में 5 से 10 ऐसी प्रवृत्तियाँ या गुण होते हैं जिसके भीतर उसका व्यक्तित्व अधिक सक्रिय रहता है।

(iii) गौण प्रवृत्ति (secondary disposition):-

गौण प्रवृत्ति वैसे गुणों को कहा जाता है जो व्यक्तित्व के लिए कम महत्वपूर्ण, कम संगत, कम अर्थपूर्ण, तथा कम स्पष्ट होते हैं।

(B) कैटेल का योगदान (Contribution of Cattell):-

कैटेल ने शीलगुणों की संख्या 35 रखा। कैटेल ने व्यक्तित्व के शीलगुणों को दो तरह से विभाजित किया:-

(i) सतही शीलगुण (Surface Trait)

इस तरह का शीलगुण व्यक्तित्व के ऊपरी सतह या परिधि पर होता है, यानि इस तरह के शीलगुण ऐसे होते हैं जो व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में आसानी से अभिव्यक्त हो जाते हैं। जैसे:- प्रसन्नता, परोपकारिता, सत्यनिष्ठा आदि।

(ii) मूल शीलगुण (source Trait):-

मूल शीलगुण का प्रेक्षण सीधे नहीं किया जा सकता है। कैटेल के अनुसार मूल शीलगुण व्यक्तित्व की भीतरी संरचना होती है जिसके बारे में हमें ज्ञान तब होता है जब हम उससे संबंधित सतही शीलगुण को एक साथ मिलाने की कोशिश करते हैं। जैसे:-

Scanned with CamScanner

सामुदायिकता, निस्स्वार्थता तथा हास्य तीनों ऐसे सतही शीलगुण हैं जिन्हें एक साथ मिलाने से एक नया मूल शीलगुण बनता है जिसे मित्रता की संज्ञा दी जाती है। कैटेल ने सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली की रचना की गई है।

8.3 व्यक्तित्व के निर्धारक (Determinants Of Personality)

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले निर्धारक निम्नलिखित हैं:—

(1) वंशानुक्रम (Heredity):— व्यक्तित्व के विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव अनिवार्य रूप से पड़ता है।

(2) जैविक कारक (Biological factors):— व्यक्ति के अन्दर endocrine gland पाए जाते हैं जिनसे बहुत सारे आंतरिक रसायन निकलते हैं जो व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

(3) मानसिक योग्यता (Mental ability):— व्यक्ति में जितनी अधिक मानसिक योग्यता होती है ~~उस~~ उतना ही अधिक वह अपने व्यवहार को समाज के आदर्शों और प्रतिमानों के अनुकूल बनाने में सफल होता है।

(4) सामाजिक वातावरण (Social environment):— सामाजिक वातावरण भी व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है।

(5) परिवार (Family):— परिवार की व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि बालक को परिवार में प्रेम, सुरक्षा और स्वतंत्रता का वातावरण मिलता है, तो उसमें साहस, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता आदि गुणों का विकास होता है।

(6) विद्यालय (School):— व्यक्तित्व के विकास पर विद्यालय का भी प्रभाव पड़ता है।

8.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1) Define Personality. Describe the trait theory of Personality.
व्यक्तित्व को परिभाषित कीजिए। व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Describe Type theory of Personality.
व्यक्तित्व के प्रकार सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Q3) व्यक्तित्व